अर्थशास्त्र के देशज आचार्य का महाप्रयाण

❐ प्रो० (डा०) ए०पी० तिवारी

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जनपद का एक छोटा गाँव है बलीतारा। यहीं पर 01 अक्टूबर, 1959 को जन्मे सहोदर भ्राता प्रोफेसर (डॉ.) शारदा प्रसाद तिवारी को काल के क्रूर हाथों ने 27 जनवरी, 2017 को हम सब से छीन लिया। वे तीन भाईयों में आयु में सबसे छोटे थे। सबसे पहले चले गये। अचानक हृदय गति रुक जाने से उनके निधन का समाचार हृदय विदारक था। लगा सब शून्य हो गया। एक ऐसी विपदा आई जो कभी भी भरी नहीं जा सकती। पिता स्वर्गीय भागवत प्रसाद तिवारी कृषक थे। वे उदारमना, विशाल हृदयी एवं गृहस्थ होते हुए संत स्वभाव के थे। माता स्वर्गीया नवरंगी तिवारी नितान्त धार्मिक व दया की प्रतिमूर्ति थीं। माता–पिता के सद्गुणों का अनुज पर सघन प्रभाव था। प्रो. तिवारी छुटपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि एवं तेजस्वी प्रकृति के थे। आरंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। हाईस्कूल तक की पढ़ाई राजकीय इण्टर कालेज, मायंग, सुलतानपुर से की। मधुसूदन इण्टर कालेज, सुलतानपुर से इण्टरमीडिएट किया। स्नातक एवं परास्नातक तक की पढ़ाई लखनऊ विश्वविद्यालय से की। यहां वे प्रातः स्मरणीय गुरुवर प्रो. शैलेन्द्र सिंह के सानिध्य में रहे। प्रो. सिंह उन्हें पुत्रवत् मानते थे। गिरी इस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज़, लखनऊ के सीनियर फेलो डॉ. आर.टी. तिवारी के निर्देशन में उन्होंने 'इकोनॉमिक रीज़नलाइजेशन ऑफ उत्तर प्रदेश' पर पी.एच.डी. की। उन्होंने अपने करियर का आरम्भ 1982 में लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में इनवेस्टिगेटर के पद से किया। मुख्यरूप में उन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय एवं अवध विश्वविद्यालय में सेवाएं दीं। वे अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में वर्ष 2000 में प्रोफेसर बने। इसी विश्वविद्यालय में वह डीन, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स भी रहे। प्रो. तिवारी ने विभिन्न अन्य प्रशासनिक दायित्वों का भी निर्वहन किया। उनमें विलक्षण प्रशासनिक कौशल था। वे विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता के प्रति पूर्णतया प्रतिबद्ध थे। उनके गम्भीर सामाजिक सरोकार थे। उन्होंने 'आध्यात्मिक अर्थशास्त्र' से लेकर 'ग्रामीण विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था' जैसे दुरूह किन्तु महात्म वाले विषयों पर एक दर्जन शोधार्थियों के पी.एच.डी. कार्य का मार्गदर्शन किया। वे लोकोपयोगी शोध के पक्षधर थे। वे कई संगठनों से जुड़े रहे और पूर्णमनोयोग से उनके संवर्धन में योगदान दिया। इण्डियन इकोनॉमिक एसोसिएशन के वरिष्ठ आजीवन सदस्य रहे और मुझ समेत उससे कई लोगों को जोड़ा।

मुझसे आयु में लगभग 7 वर्ष छोटे थे। स्वाभाविक रूप में आरंभिक से उच्चशिक्षा तक मै उनका मार्गदर्शक व शिक्षक रहा। बहुत कुछ उन्हें पढ़ाई–लिखाई से सुसज्जित किया। मैंने पाया कि उनमें समझ की एक विलक्षण द्युति थी। उनमें अदम्य निर्भीकता थी। उनका धुर्धष व्यक्तित्व था। उनमें समस्याओं के समाधान की अद्भुत क्षमता थी।

परोपकार की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। दूसरों के हितार्थ सदैव तत्पर एवं प्रयत्नशील रहते थे। उनकी आर्थिक विचारधारा भारतीय सामाजिकी, सांस्कृतिकी एवं परंपरा में रची–बसी थी। वस्तुतः वे विचार, व्यवहार एवं खान–पान में निरापदेन देशज थे। यह देशज दृष्टि उनको परिवार से विरासत में मिली। पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति की चकाचौध के वे धुर विरोधी थे। यही नहीं उनका मानना था कि सर्वोदय के रूप में विकास की भारतीय दृष्टि ही धारणीय हो सकती है; न कि पश्चिम की भौतिक प्रगति। वे अर्थ एवं आध्यात्म के मध्य सामंजस्य चाहते थे। गाँव, गरीब, जल, जमीन, जंगल एवं जानवर से उनका विशेष लगाव था। वे चाहते थे कि जैविक खेती और जल प्रबंधन गाँव के विकास का मूलाधार बने। खेती से वानिकी, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण व पिद्दी औद्योगिक इकाईयों को जोड़कर गाँव से लोगों का पलायन रोका जा सकता है। उनकी दृष्टि सर्व समावेशी एवं अन्त्योदयी थी। दोनो नवरात्रि में पैतृक गाँव जाकर काली माई के देवोत्थान पर सामूहिक पूजन करवाते थे। दूसरों के लिये व्यस्त

रहना उनका स्वभाव था; स्वयं अपने लिये बहुत कम समय दे पाते थे। वे सच्चे अर्थ में कर्मयोगी थे। उनमें अक्षुण्ण भारत की प्रबल भावना थी। कुछ दिनों पहले पूर्वोत्तर के राज्यों के भ्रमण के बाद उन्होंने मुझसे हिमालयन रेंज से जुड़े विभिन्न पक्षों पर अध्ययन के बारे में विस्तार से चर्चा की और कहा कि इस पर कार्य आरम्भ कीजिये। प्रोफेसर (डॉ.) शारदा प्रसाद तिवारी अर्थशास्त्र के देशज आचार्य थे। उनके महाप्रयाण को शत–शत् नमन् करते हुए उनके प्रति अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ❑

आप का मुस्कुराता चेहरा दिल में है पापा

❒ श्रेया

मेरे प्यारे पापा, आपको मुझको छोड़ने से पहले 15–20 मिनट पहले का वो पल जब मैंने आपके गले में हाथ रखा और गर्व से एक दूसरे को देखा उस पल का सुख–दुःख का मिश्रित अनुभव मै कह भी नहीं पाउंगी। मैं आपके गर्व को कम नहीं होने दूँगी पापा। वह 26 की शाम जब मैं एडमिशन के लिए परेशान थी तो आप ने कहा ''हम हैं बाबू, हम हैं बेटा''। आपकी बेटा बनकर दिखाऊँगी। जब मुझे कोई नहीं समझता था तो आप मुझे देखते और मैं शान्त हो जाती। आपका एक बार 'बाबू' कहना ही मेरे लिए सब कुछ था। उस 26 को आखिरी बार आप को तेल लगाया। उस पल सोचा था रोज लगाऊँगी पर अब वह तेल लगाना नहीं होगा। ठीक है, मैं मम्मी को लगाऊँगी। वो आपका रोज रात को दो बजे उठना, आज भी मेरी आँखे आपको एक दो बजे तलाश करती हैं। 18 से पहले तो मैं आपसे बात भी नहीं कर रही थी। उन दिनों की भरपाई नही हो सकती पर दुःख रहेगा हमेशा। मेरे आपसे दो दिन न बोलने पर आप स्कूटी ले आये, वो भी परेशान है। मेरे रूम में आकर आपने कहा था कि ''जहाँ जब जो चाहोगी सब मिलेगा'' पर अब इतना समझ चुकी हूँ कि मेरा अब कुछ नहीं, जो थे, जो जैसे भी हो, मेरे हो पापा। अब जो लोग कहेंगे वही होगा मेरे साथ। मैं बस इतना जानती हूँ पापा आप और मम्मी मेरे दो पैर थे, एक अब नहीं है पर जिन्दगी तो चलेगी। मम्मी और आपकी जगह जो मेरी हेल्प करेगा, अब वह ही मेरा है। आप हमेशा कहते थे ''मेहनत करो, रिजल्ट से मतलब नहीं है''। यादें बहुत हैं, बातें बहुत हैं। अब आपका मुस्कुराता चेहरा दिल में है पापा। आपकी **श्रेया।** ❑

जो बातें कल हँसाती थीं आज रुला रही हैं

❐ डा० मंजुला उपाध्याय

आप का पुरानी अम्बेस्डर खरीदने और फिर बनवाने का शौक हमें सनक लगता था किन्तु वह आपको अपनी जिम्मेदारियों से ज्यादा प्रिय थी। उसमें चाहे जितना खर्च हो आपको कभी नहीं अखरता और आप कितना गर्व करते थे उन पर। ...और उसकी बुराई आप को बर्दाश्त न थी। अगर उनमें जीवन होता तो वो भी आज विलख रही होती। विश्वास खण्ड में आज वो भी अनाथ पड़ी है।

अश्रुपूरित नेत्रों से श्रदांजली के सिवा हम आपको अब दे ही क्या सकते हैं ? जीवन भर हम चाहे सिसकें बिलखें पर आप तक हमारा आपके लिए अमर प्रेम पता नहीं आपको अहसास दिला भी पायेगा या नही। वैसे तो किसी के जाने पर लोग दुःखी होते हैं पर आप ने मुझे एक दम से तोड़ ही दिया। बस वक्त ही शायद इस जख़्म को कुछ भर पाये, किन्तु दाग जीवन भर रह जायेगा। अभी अपनी सबसे छोटी बुआ जिनके साथ बचपन की सुखद यादें थीं। फिर वो अपनी दुनिया में व्यस्त और हम अपनी, किन्तु उनकी मृत्यु ने झकझोर कर रख दिया।

उस सदमें से उबर ही रहे थे कि आप जो मेरे सम्बल थे, एक झटके से छिटक कर आगे चल दिये। हम इतना रोये, बिलखे, कराहे, लगा हम सह नहीं पायेंगे और आप के पास जाकर आपको बुला लायेंगे। पर हकीकत यह हैं कि यह सम्भव नहीं है और जीवन यात्रा हम अकेले ही तय करते हैं। लोगों को हो सकता है ये लगा हो कि चाचा के लिए इतना क्यों परेशान है, पर आप जानते हो आप सिर्फ चाचा नहीं, पिता, सखा, गुरु, हर भूमिका में थे। बचपन से आज तक आप से कभी सम्पर्क टूटा ही नहीं। शादी के बाद भी आप लगातार घर आते। हेमन्त आपके दामाद कम दोस्त की भूमिका में ज्यादा रहे। रिशित, नीलाक्ष, मैथिली के आने से पहले और बाद भी टुकटुक नाना का शरारती वात्सल्य मेरे पुत्रों रुचिर और देवश्रुत को मिला। आप का हमेशा हँसते हुये कहते कि ''दोनों इतने शैतान हैं कि लगता नही प्रोफेसर के बच्चे हैं'' हमेशा हँसा जाता, किन्तु रुला रहा है। कालेज में बैठी थी तो हेमन्त ने बहुत घबड़ाते हुए फोन किया – घर आ जाओ। बहुत पूछने पर भी नही बताया कि क्या हुआ। रास्ते भर गाड़ी चलाते यही सोचती रही–कहीं कोई बड़ा बुजुर्ग बहुत सीरियस तो नही हो गया ? मृत्यु का तो खयाल भी नहीं आया। आशू, संजू किसी का फोन नहीं आया तो मुझे यही लगा कोई बहुत सीरियस बात नहीं होगी। पर घर पहुँचते ही हेमन्त को बाहर तैयार खड़े देखा तो मुझे लगा इन्हें कहीं अचानक जाना होगा। अन्दर आई तो मैने पूछा–क्या हुआ ? हेमन्त ने कहा – चाचा नहीं रहे ! मैने पूछा – कौन चाचा ? मेरे प्रिय चाचा को तो मैं सपने में भी सोच नहीं सकती थी। फिर बोले– प्रोफेसर एस0पी0 तिवारी चाचा। कान जैसे सुन्न हो गया ! फिर तो जो कुछ भी घटता गया उस पर आज तक यकीन करने को जी नही करता और न ही करूँगी । मैं तो यही सांत्वना दूँगी कि आपके आने का इन्तजार हमेशा रहेगा।

इतना सरल, सुलभ, निश्छल, प्रेमी, हँसमुख और ना जाने क्या–क्या खूबिया बताऊँ। ऐसा इन्सान मैने आज तक नहीं देखा। आप का असामायिक जाना कभी न पूरी हो पाने वाली क्षति है परिवार और समाज के लिये। यदि आप दीर्घायु होते तो बहुत आगे जाते। क्योंकि थकना तो आप ने सीखा ही नहीं। मुझे और हेमन्त को हमेशा यही लगता था कि आप क्यों इतना परेशान रहते हो ? इतनी दौड़ भाग करते हो, इतना अनावश्यक छोटी–छोटी बातों पर मेहनत क्यों करते हो ? आराम का अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिये ईश्वर ने आपको सब कुछ तो दिया था, पर आप हमेशा जल्दी में रहते थे। अब लगता है कि जो हुआ वो पहले से तय रहा होगा। जिसका पता था आप को। इसलिये ही आप सब कुछ जल्दी–जल्दी निपटाना चाहते थे। पिछले एक महीने की तीन मुलाकातें जीवन भर नहीं भूल पाऊँगी और वे बहुत ही सुखद वात्सल्य पूर्ण थीं। इतने प्रेम से बातें कीं, आप

खुद ही मँगाकर खाये, चाय पिये, मैं कम से कम इस बात का सन्तोष कर सकती हूँ। कई बार मेरी आप से बहस भी हुयी, पर वो या तो किसी और को लेकर हुयी या जब–जब लगा आपका प्रेम हमारे प्रति कहीं कम तो नहीं हो रहा ! पर पिछली मुलाकातों ने मुझे यह अहसास नहीं होने दिया, वही मेरी सुखद यादें हैं। मेरे हर सुख दुख में आप मेरे साथ थे और हमेशा रहियेगा, अपना आशीर्वाद बनाये रखियेगा। बाकी आपके जाने के दर्द की कोई दवा नहीं है। जिसने सुना वही स्त्ब्ध रह गया तो हमारी क्या बात !

हमने तो बचपन से आज तक का जीवन आपकी छत्रछाया में बिताया है। मेरे लिये आप इसलिए खास हैं क्योंकि आप मुझे जन्म देने वाले तो नहीं थे फिर भी पिता तुल्य थे। इसलिए मुझे आपसे बहुत आशाएं थीं। आप जो वात्सल्य प्रेम देते थे, हम उसी में निहाल थे। मुझे 14 जनवरी 2017 का वो दिन याद है जब अखिरी बार दरवाजा खटखटाये और मुस्कुराते हुए अन्दर आये और बोले– मंजू मुझे सी0एम0एस0 सभागार में इंडिया वाच से सम्मान मिलेगा, चलो। मैंने मना नहीं किया और स्वतः तैयार होकर बच्चों को लेकर पहुँच गयी। क्योंकि हेमन्त गाँव गये थे। ऐसी स्थिति मे मैं कहीं जाना, सबको लेकर टाल देती हूँ। पर उस दिन आपको 'शख्सियत सम्मान' मिलते हुए देखना मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात थी। क्योंकि आप उसके योग्य थे। देवश्रुत घर जाने की जिद्द किये जा रहा था फिर भी मुझे उस दिन आपको छोड़कर जाने का मन ही नहीं कर रहा था। न जाने क्यों मुझे इतनी खुशी महसूस हो रही थी। थोड़ी देर बाद मुझे आना ही पड़ा। आपने कहा उस स्मृति चिन्ह और बुके को मैं अपने घर ले जाऊँ। उसके बाद मैं इंतजार ही करती रह गयी। आप उसे लेने आओगे चाचा, आप नही आये। और 27 जनवरी 2017 को इस दुनिया को आप अलविदा कह गये। कुलपति बनने का सपना अधूरा लिये। कितने आश्वस्त रहते थे आप कि आप उस पद पर शोभायमान होंगे। आप किसी के काम में रोड़ा नही डालते थे। अयोग्य लोगों को भी भौतिक दृष्टि से योग्य बना दिया। इतनी सुगमता से दुनिया भर के काम करवा देते थे, पर काल सबसे बड़ी बाधा बन गया और उसने आप जैसे व्यक्ति को हमसे इतनी जल्दी छीन लिया। जब मै इस दावानल से होश में आयी तो मैंने साईंबाबा को बहुत कोसा कि मैंने बृहस्पतिवार को आपका व्रत रखा, और आपने शुक्रवार की सुबह कभी न जाने वाला दुःख दे दिया! हमेशा अपने प्रिय लोगों में से एक व्यक्ति को आप ने अचानक छीन लिया! उनकी सेवा करने का मौका भी नहीं दिया! लखनऊ आ जाते, इलाज हो जाता और ठीक हो जाते तो कितना अच्छा होता। पर ऐसा हुआ नहीं।

आप जीते जी जितने मायाजाल में फंसे थे उससे आपको मुक्ति मिली। आप जहाँ भी रहो आनन्दमय रहो। हो सकता है मौनी अमावस्या को सुबह जाने की वजह से आपको निर्वाण मिला हो, क्योंकि आप एक पवित्र आत्मा थे। मन में खोट नहीं था। अभी कुछ ही दिन पहले चाची को स्कूटर पर बिठाकर घुमाकर लाये आप और हमारे यहाँ दोनों हँसते खिलखिलाते आये। उस दिन मोमोज बनाये थे, दोनों ने खाया। चाची शिकायत कर रही थीं हजरतगंज में खरीददारी नहीं कराये, तो टालकर कहे– सब यहीं मिलता है। मैने और हेमन्त ने कहा भी कि चाची को लेकर साल में एक दो बार घुमा दिया करो। पति के साथ अच्छे बिताये पलों की बात ही कुछ और होती है। तब भी आप हँसी में टाल गये। क्योंकि आप का मानना था कि जरूरत के लिए खर्च करना चाहिये न कि विलासिता में। वो सब आप संजोकर विरासत छोड़ना चाहते थे शायद! फिर भी वो आप का पुरानी अम्बेस्डर खरीदने और फिर बनवाने का शौक हमें सनक लगता था किन्तु वह आपको अपनी जिम्मेदारियों से ज्यादा प्रिय थी। उसमें चाहे जितना खर्च हो आपको कभी नहीं अखरता और आप कितना गर्व करते थे उन पर। ...और उसकी बुराई आप को बर्दाश्त न थी। अगर उनमें जीवन होता तो वो भी आज विलख रही होती।

विश्वास खण्ड में आज वो भी अनाथ पड़ी है। उसमें पेट्रोल भरने के लिये गंगाजल को पानी की तरह बहा दिया। कितनी मीठी यादें हैं। क्या मालूम था एक दिन यही सब अनगिनत बातें रूलायेंगी हमें। सबको पता है कि जाना है एक दिन सबको पर असमायिक, अचानक, इस तरह। एक–एक कर सब भाई–बहन जा रहे हो, सुन्दर सा कुनबा एकदम

विखरता जा रहा है, और आप तो उसके मुख्य स्तम्भ थे। अब देखिये क्या होगा ?

आँसू तो शायद बहते–बहते एक दिन सूख जाये पर दिल का बोझ कभी हल्का न होगा। आपके बगैर हमें हमेशा विश्वास था काली माई किसी को अल्पायु में नहीं ले जायेंगी और सब हँसते–खेलते, लड़ते–झगड़ते, वृद्धावस्था तक साथ जीवन वितायेंगे। पर सही में कलयुग आ गया है। अब ईश्वर भी नकारात्मक ऊर्जाओं के समाने बेबस दिखते हैं मुझे। दुष्ट ही दुनिया पर राज करेंगे और फिर प्रलय को तुम भी न रोक पाओगे। हम तो बस प्यार दुलार से तस्वीरों को निहाल अपने को समझायेंगे। आपकी **मंजुला।** ❑

मिस यू चाचा

❑ डा० अंजुला मिश्रा

चाचा आप कितने सरल व्यक्तित्व के थे जो दे दो वो खा लेते थे, हमेशा मुस्कुराते रहते थे। मुझे आज भी याद है कि आप अनार कैसे खाते थे। खड़े अनार को हर तरफ से दबा देते थे और छेद करके उसका रस पी लेते थे। आपकी हरकतें बिल्कुल बच्चों जैसी थीं। सभी बच्चे आपसे घुल मिल जाते थे। मुझे याद है कि कैसे आप रुचिर से बचपन में जीभ से टक–टक करते थे जिससे आपका नाम टुक–टुक नाना पड़ गया।

आपकी सबसे खास बात यह थी कि आप जितने ही भावुक थे उतने ही समझदार भी। इस प्रकार के व्यक्तित्व ने आपको अनोखा व्यक्ति बना दिया था। मुझे याद है कि आप मेरी विदाई में कितना फूट–फूट कर रोए थे। पर जब मेरे जीवन में समस्याएं आँईं तो आपने समझदारी के साथ मेरी समस्याओं का समाधान भी निकाला। इसलिए मैं आप में पिता की छवि देखती रही। जीवन में जब खुशी मिलती थी तो आपके साथ बांटकर अच्छा लगता था और आप भी बहुत खुश होते थे। मेरी सरकारी नौकरी लगने पर आप कितने खुश थे। हमेशा कहते रहते थे ''बच्ची मेहनत करते रहो'' यह भाव आपका मेरे लिए ही नहीं वरन् पूरे परिवार के सभी बच्चों के लिए था। आप हमेशा चाहते थे कि हम सब जीवन में आगे बढ़ें। आपके निधन के बाद जब राहुल से बात हो रही थी तो वो भी यही कह रहा था कि आप राहुल को हमेशा प्रोत्साहित करते थे कि जीवन फिर से शुरू करो और आपकी वजह से नौकरी मिली है, जिसकी पहली तनख्वाह वह आपके हाथो में देना चाहता था पर आप तो चुप–चाप बिना बताए हमेशा के लिए चले गये।

चाचा आप इस परिवार की धुरी थे। आप को इस परिवार के सभी लोगों का ख्याल था क्योंकि आप सब का सहारा थे। माधुरी बुआ के जाने के बाद आपने इतनी अच्छी तरह से उनके परिवार को संभाला था पर अब आपके जाने के बाद हमें कौन सम्भालेगा!

मेरे प्यारे चाचा, जग के दुलारे चाचा, जग में सबसे न्यारे चाचा, अब आप नहीं रहे, यह विचार जैसे ही मन में आता है तो दिल बैठ जाता है, आँखों से आंसुओं की धारा रुकती नही है। आपके बिना कैसे जीयें यह समझ में नहीं आता। यह अभी भी विश्वास नहीं होता है कि आप अब हम सबके बीच नहीं रहे। ऐसे लगता है कि कोई बुरा स्वप्न देखा है और जैसे ही आँखें खोलेंगे तो आप सामने आ जाएंगे। पर सच्चाई यही है कि हमें अब आपके बिना जीवन जीना पड़ेगा जो अत्यंत कठिन है।

जाते–जाते चाचा अपने जाने का गम दे गये,
सब बहारें ले गये और रोने का मौसम दे गये।
ढूँढती है निगाह पर अब वो कहीं नहीं,
अपने होने का वो मुझे कैसा भ्रम दे गये।
मुझे मेरे चाचा की सूरत याद आती है,
वो तो न रहे अपनी यादों का सितम दे गये।
एक अजीब सा सन्नाटा है आज कल मेरे घर में,
घर की दरो–दीवार पर उदासी ही उदासी है।
बदल गयी है अब तासीर, तासीरी जिन्दगी,
तुम क्या गये आँखों में मंजरे मातम दे गये.....

मिस यू चाचा, आपकी–**संजू (अंजुला मिश्रा)।** ❑

वो मुस्कुराता चेहरा याद आता है

❐ शैलजा मिश्रा

प्रिय मामा,

आपके बारे में सोचते ही आपका मुस्कुराता हुआ चेहरा याद आ जाता है। कितनी भी बड़ी मुश्किल हो, आपको देखकर आसान हो जाती थी। जब भी कोई समस्या होती थी, तब हम आपको ही याद करते थे। क्योकि यह विश्वास था कि आप कभी 'ना' नहीं कहेंगे और हमारी समस्यायें सुलझा देंगे। हमेशा पढ़ने लिखने के लिए प्रेरित करते रहते थे। आप कहते, कि ''ऐसी कौन सी समस्या है जिसका हल नहीं है।'' कितना संघर्ष करने के बाद इतना ऊँचा पद पाया पर कभी अपने पद पर अहंकार नहीं किया। चाहे बच्चे हों, बड़े हों, आपके विद्यार्थी या रिश्तेदार, सब खुल कर अपनी बात आपसे कहते थे। आपने हमेशा परिवार को प्रथमिकता दी, सबको साथ लेकर चले। सबके दुःख तकलीफ में साथ दिया। मेरी माँ के निधन पर भी आपने और मामी ने सब कुछ संभाला था। इतने ऊँचे पद पर रहते हुये भी आपका व्यक्तित्व कितना सरल था। आप हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं और सदैव रहेंगे।

आपका व्यक्तित्व सदैव हमें अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। आपको 'मीठे' से प्रेम था और वही मिठास आपने रिश्तों में भी भर दी। आपने जीवन के हर पल को खुलकर जिया और हम सबका जीवन अच्छी यादों से भर दिया। आप सामने नहीं हैं मगर सदैव हमारे दिल में रहेंगे। हमें जीवन में आगे बढ़ने और दूसरों की मद्द करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

आपका आशिर्वाद सदैव हम सबके साथ रहेगा। जब भी रक्षाबंधन आयेगा तो सबसे पहले आपकी और माँ की याद आएगी। आपके बिना हमारी खुशियों अधूरी रहेंगी मामा। आप इतना व्यस्त रहते थे फिर भी आप समय निकाल कर माँ की पुण्य तिथि पर आए और हमें ढांढस बंधाया। मुझे नहीं पता था कि 9 तारीख को आप आखरी बार आयेंगे।

हमेशा सब की छोटी–छोटी बातों का ख्याल रखा आपने। हम हमेशा आपकों याद करते रहेंगे मामा। भगवान आपकी आत्मा को शन्ति दे। आपकी **चाँदनी।** ❑

चरणों में समर्पित कोटि प्रणाम

❐ अनुजेन्द्र तिवारी

हे! विद्या पुरोधा, शैक्षिक योद्धा, आप पधारे परम धाम!
अर्थशास्त्री, विद्वतधात्री, शिक्षाविद् सेवा निस्काम!!
स्वच्छ आचरण, स्वतंत्र विचारण, धरमवीर उन्नत ललाम!
अगनित बीज ज्ञान के बोये, जो बन गये वट् वृक्ष तमाम!!
समवेत् श्रद्धांजलि अर्पित करते, चरणों में समर्पित कोटि प्रणाम।

शोक संतप्त
अनुजेन्द्र तिवारी
प्रवक्ता (अर्थशास्त्र)
रा0 आ0 प0 इ0 कालेज, फैजाबाद

अब यह कोई नहीं करायेगा

❐ अमरेश शुक्ला

प्रिय पापा जी,

बहुत कम दिनो का साथ था आपके साथ पर उनमें बिताये हुए हर पल में आपसे बहुत कुछ सीखने को मिला। कैसे अपना फाइनेन्स मैनेज करना है, अपनी सोसाइटी को कैसे डेवलेप कर सकते हैं, और सबसे बड़ा कैसे निःस्वार्थ सबका भला करते हुए जिन्दगी जीना चाहिए। जब भी आपका फोन आता था तो लगता था कहीं वी0सी0 की पोस्ट के लिए वेकेन्सी चेक करना होगा या एप्लाई करना होगा या कोई टिकट कराना होगा, पर अब यह कोई नहीं कराएगा। अपनी बात पूरी होते ही फोन कट कर देते थे, वही अब भी किया। किसी का कुछ सुने बिना चले गये। आप हमेशा याद रहेंगे और यह कसक दिल में रहेगी, ''काश! कुछ दिन और मिल जाते आपके साथ रहने को।'' ईश्वर आपकी आत्मा को शांति दें। **अमरेश शुक्ला।** ❑

काश! आपके साथ और रह पाते

❐ विदुला शुक्ला

पापा बहुत कुछ है दिल में जो लिख नहीं सकते। बस आपके साथ बिताया हुआ वक्त आँखों के सामने आ जाता है। हमेशा रहता था कि पापा सम्भाल लेंगे, कोई भी प्राबल्म हो, कोई भी परिस्थिति हो, मेरे लिए एक ही सल्युशन था ''पापा''। यह तो यकीन है कि आप जहाँ भी होंगे आराम से होंगे। बस एक बात है कि हम दो दिनों में फैजाबाद आ ही रहे थे, आपसे मिल लेते, बात कर लेते, आप के साथ और रह पाते। हमेशा सपोर्ट किया, बहुत कुछ सिखाया है, बस अब आपके सिद्धांतों पर चलना है और जिम्मेदारी उठानी है कि आपका नाम अमर रहे, ''नाथ फाउण्डेशन'' नाम भी दे दिया आपने। आपकी कमी तो हमेशा रहेगी लेकिन यह विश्वास है कि आप हम लोगो के साथ हमेशा रहोगे। आपकी **गुड़िया।** ❑

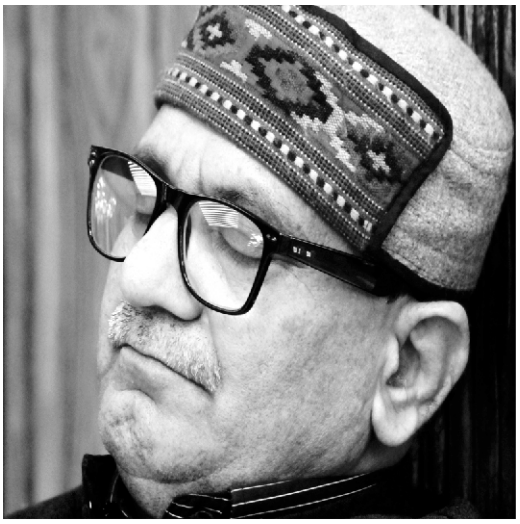

हम सब साथ रहेंगे प्रिय चाचा

❐ बुलबुल

प्रिय चाचा,

आपके और मेरे बीच कभी बहुत बात–चीत नहीं हुई पर जितना मैं जानती हूँ आपके बारे में कि हर सम्भव रास्ते से मेरी सहायता की आपने। हम सब बच्चों में आपका अंश है, हम आपके साथ रहे, हमने आपके बाद चाची और श्रेया की हिम्मत बढ़ाई। हम सब साथ रहेंगे जैसा आप चाहते थे। आप हम लोगों की सहायता करते रहियेगा जहाँ भी रहियेगा। आपकी **बुलबुल।** ❑

मेरे पिता तुल्य संरक्षक

❐ डा० अमितेन्द्र सिंह

मेरे पिता तुल्य संरक्षक का इस तरह चले जाना मेरे लिय अकल्पनीय है। जीवन के प्रत्येक पक्ष पर उनकी सलाह और सहारा बिना चलना मेरे लिए असम्भव था। आज प्रत्येक सुबह उनका याद आना ही और शून्यता रहना मेरे लिए अविस्मरणीय है। आपका **अमितेन्द्र सिंह** ❑

चिर शान्ति में चले गये

❐ निलय तिवारी 'आशू'

जिसकी उंगली पकड़ कर चलना सीखा।
वो हाथ छुड़ा कर चले गये।।
जिनके सिर चढ़ हम इतराते थे।
वो सिर उठा के चले गये।।
कहाँ कहाँ उनके साथ चले।
वो जाने कहाँ अब चले गये।।
जो जग में छाये रहते थे।
वो जगन्नाथ की शरण गये।।
सबके दुःख–सुख में जो शामिल थे।
वो सबको दुःखी छोड़ कर चले गये।।
कहें 'निलय' अब चाचा किसको।
ये हक ही मार कर चले गये।।
उदार हृदय जो विश्वमना थे।
वे चिर शांति में चले गये।।

मैथिली के धाम गये

❐ आभा और मैथिली

जो मुझको इस घर में लाये।
वो घर छोड़ कर चले गये।।
जो सबके दिल में बसते थे।
वो संसार छोड़ कर चले गये।।
जो सबके सबसे प्यारे थे।
वो प्यार निभाकर चले गये।।
श्रीअवध की पुण्य भूमि पर।
पुण्य कमाकर चले गये।।
मैथिली के बाबा बनकर।
मैथिली के धाम गये।।

बड़ी मुश्किल से होता है चमन मे दीदावर पैदा

❒ पवन उपाध्याय

ये दुनिया अक्सर उन्हें सस्ते में लूट लेती है,
खुद की कीमत का जिन्हें अंदाजा नहीं होता।।

इतना सहज और सरल व्यक्तित्व था शारदा चाचा का, और वो चले गए! न जाने कौन सी नाराजगी दिल में लिए, और किसी को कोई खबर नहीं! 27 जनवरी की सुबह हेमंत भाई की एक फोन कॉल और दिमाग सन्न हो गया! 'यार, फैजाबाद वाले चाचा को हार्ट अटैक पड गया ! 'हेमंत को कभी इतना विचलित नहीं पाया था! हमने कहा 'फोन रखो, मैं आ रहा ! 'क्षण भर में जिन दो चार लोगों को फोन किया सबके फोन बंद! अचानक गौरव मणि त्रिपाठी जिनका ताल्लुक फैजाबाद से है, के एक खास नंबर का ख्याल आया और नींद में ही भाई ने कहा 'भैया हुकुम कीजिये' ! मैंने सीधे फरमान सुनाया 'भाई जिला अस्पताल पहुंचो ! और भाई बरसते पानी में पहुंचते पहुंचते तब तक चाचा चले गए उस अनन्त यात्रा पर, जहां से वापसी नहीं ! लाख सामर्थ्य होते हुए भी ! कौन समझेगा कि कितने बड़े सरोकारों के केंद्र को हमने इतने असहाय हो कर खो दिया? विकट से विकट समस्या हो, कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियां क्यों न हों, चाचा को तनिक भी तनाव में कभी नहीं देखा ! अपने संबंधों में इतने सहज कि बिना असहज हुए कुछ भी अच्छा बुरा क्यों न हो, मुस्कुराते और कहने की सहजता दे देते सबको, और लग जाते अपने धुन में 'हम्म, देखते हैं' कह के! सरोकार ऐसे कि देश का कोई कोना अछूता नहीं और विनम्रता इतनी कि नौनिहालों के 'टुक टुक नाना' ! ये टुक टुक नाम भी ऐसे नहीं मिला, रात बिरात के किसी पहर कुछ खोजते, कुछ करते रहते, जिससे सबके सोने में खलल पड़ता! कोई कुछ कहता तो सुन लेते! रुचिर और देवश्रुत के टुक टुक नाना! जरा भी अभिमान नहीं कि प्रोफेसर हैं और प्रोफेसर होने का कुछ रुआब भी होता है ! हमने क्या खोया, क्या बताएं लेकिन जो खो दिया अब शायद वीरान ही रहेगा, ताजिंदगी ! चाचा

जहां भी रहना, हम सब की चिंता मत करना क्यों कि जब तुम ही नहीं तो कुछ चाहिए भी नहीं ! जो तुम दे सकते थे वो कोई नहीं दे सकता ! कोई भी नहीं ! सच में चाचा, रात के इस पहर सिर्फ तुम्हारे लिए कुछ लिखना चाहता था ! पिछले दो दिनों से कुछ भी देखने सुनने का दिल नहीं किया जब कि बहुत से फोटो भी थे और वजहें भी ! तुम हमारे दिलों में अमर हो ! अपनी उन आदतों से जिस पर सब खीझते थे तुमसे, लेकिन आज वही याद आ रहीं और रो रहे हम सब ! कुछ का रोना सबने देखा, कुछ हमारे जैसे नालायक रोते नहीं दिखे ! मैं जानता हूँ, कोई समझे न समझे, तुम समझ रहे होंगे हमारे हँसने का भी मतलब ! क्यों कि अभी तक हमें नहीं लग रहा कि तुम नहीं हो हमारे बीच ! चाचा .रियली, आप गजब थे !

अधियाती जिंदगी में बहुत सी मौतें हुईं, लेकिन तुम्हारी मौत सी कोई मौत नहीं अखरी ! अभी तो बहुत कुछ शेष था चाचा ! ऐसी भी क्या जल्दी थी ? तुम्हारी मनमोहक मुस्कुराती छवि भूल नहीं रही ! मानो अभी बोल उठोगे ''का हो पवन, कहाँ रहत हौ, चाचा के भुलाय गयो ! और हम भी कहेंगे ''का चाचा, हम्मै रहैक नाही है का ?'' और तुम मुस्कुरा दोगे !

फ़क़त तस्वीर को जी भर के देख लूँ उसकी,
न फिर इन आँखों से कोई काम लेना है..!!

अपरिचितों को संभव है हमारा यह कहना अतिशयोक्ति लगे लेकिन चाचा प्रो एस पी तिवारी सर के लिए उन परिचितों को तो कतई नहीं जो उनके दोस्त या दुश्मन थे! उनकी असमय मृत्यु बार बार उनकी सुध दिलाती है और रुलाती है! रोज रोज उनके प्रसंग आँखों की पोरों को नम करते हैं ! रोज कुछ न कुछ कहने और लिखने का दिल करता है ! न जाने ये कैसी भावुकता है या उनके प्रति लगाव? कालजयी व्यक्तित्व के साथ ऐसे ही वो हम सब की सुधियों में बने रहेंगे ! शिक्षा के क्षेत्र में उनकी कई शाखाएं अनंत भविष्य में अतीत का पुनर्पाठ करेंगी ! कितना कहें, कितना लिखें और कितना सुनाएँ, यह एक न खत्म होने वाला कालजयी वृत्तान्त है !

किसी का लिखा याद आता है कि ये दुनिया हमें चार चीजो से आंकती है, हम कैसे दिखते है, हम क्या करते है, हम कैसे बोलते है और हम क्या बोलते है ? इनके जवाब मिलते ही एक छवि निखरती है जिससे हम अपने दिल और दिमाग में जगह देना है या नहीं, तय करते हैं ! इन चारो शंकाओं के सकारात्मक प्रतिमूर्ति थे प्रो एस पी तिवारी सर ! आज जब वो स्थूल में हमारे बीच नहीं हैं तो उनसे जुडी स्मृतियों को अपने दिलों में सहेजे रखना आज की आपा धापी में बेहद जरुरी है ! क्यों कि दिखना सहज कि सबको सुहाए, करना वही जो मानवता बढाए, बोली ऐसी कि जो मन हर्षाये, बोलना वही जो सबके मन भाये, इसके साक्षी हम आप और वो भी जिन्हें हम जानते तक नहीं शायद ! यदि उनके जैसे विराट व्यक्तित्व वाले महामना के लिए सच कहें तो इन पंक्तियों में एक अजीब सी सम्पूर्णता है–

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा !!
❑

अभी सब संभल नहीं रहा पापा

❑ निमिषा

पापा, एक बाप बेटी का रिश्ता शब्दों में नहीं लिखा जा सकता ! मेरे करीबी जानते हैं आप के लिए मेरा प्यार। हमेशा मुझे शिकायत रही कि आप मुझे प्यार नहीं करते हैं। मैंने हमेशा आप को खुश करना चाहा मगर कर नहीं पायी । मेरा दस दिन पहले फैजाबाद आना मेरे जीवन का सबसे यादगार समय बन गया है। इन दस दिनों में आप ने मेरी शिकायत दूर कर दी अपने व्यवहार से। आखिरी हर समय में आप के साथ थी, मगर कुछ कर नहीं पायी। माफ करना पापा।

आप ने बहुत जिम्मेदारी डाल दी पापा। हमेशा लड़के की तरह रखा आप ने मगर बहुत जल्दी साथ छोड़ दिया। थोडा और जिम्मेदार बनाना चाहिए था। अभी सब संभल नहीं रहा है । निमिषा ❑

सुधियों के वातायन में

सुधियों के वातायन में